किरदार

मेरे किरदार को देखोगे,
तो में रागों में मिलूँगा।।
इस तिलिस्म की धुन को
धड़कते हुए दिल में सुनना
असंख्य कथाओं के मसविदे कैद हैं तारिखों में
जब-जब भी पढ़ता हूँ किसी तूफान की इच्छा शक्ति
और आँधियों का व्याकरण
किसी मिट्टी के दिये सा जल उठता हूँ
मुझे न समझों सिर्फ वृक्ष
मैं तूफानों से लड़ सकता हूँ
मुझे मेरे विस्तार से न समझना
जब मैं एक दरिया था
तब भी छुपाये समन्दर था

.................प्रतिभा चौहान